अन्याय जिधर, है शक्ति उधर (शक्ति की मौलिक कल्पना के विशेष सन्दर्भ में महाकवि निराला की 'राम की शक्तिपूजा' का मूल्यांकन)

आशीष कुमार पाण्डेय

महाकवि निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' नामक अपनी लम्बी कविता में 'अन्याय जिधर, है शक्ति उधर' सन् 1936 में लिखी थी। उनकी यह उक्ति आज इक्यासी वर्ष बाद भी इक्यासी गुनी सत्य है।

'राम की शक्तिपूजा' का वर्ण्य विषय भी इसी शक्ति संकेन्द्रण में निहित है। चाहे राम रहे हों या न्याय का पक्ष लेने वाला आज का मानव, रावण या अन्याय के प्रतीकों के सामने उसे कठिनाई झेलनी ही पड़ती है। कारण, अन्याय की उग्रता शक्ति के संकेन्द्रण पर भारी पड़ती है। यह सदियों से होता चला आ रहा है। 'राम की शक्तिपूजा' का आरम्भ ही 'रवि के अस्त' होने से होता है। मतलब यह कि सूर्य जो पराक्रम का प्रतीक है, का पराभव हो रहा है। प्रकारान्तर से निराला ने न्याय के ऊपर अन्याय को चतुर्दिक हावी होते हुए दिखाया है।